संगमयुग को सफल बनाने की विधि

आज का समय अर्थात् संगमयुग, मानव जीवन का सबसे पवित्र और मूल्यवान काल है। यह युग वह अलौकिक संगम है जहाँ एक ओर पुराना कलियुग समाप्ति की ओर है और दूसरी ओर नया सतयुग आरम्भ होने वाला है। यह समय परमात्मा से मिलने, आत्मा को सशक्त बनाने और

भविष्य के दिव्य जीवन की नींव रखने का अनुपम अवसर है। जो आत्माएं इस युग की महत्ता को समझती हैं, वो जीवन को श्रेष्ठ दिशा में मोड़कर स्वयं और संसार दोनों के लिए कल्याणकारी बन जाती हैं। जिन्होंने ये अच्छी रीति समय के महत्त्व को जाना है, समझा है वे कभी भी इसे व्यर्थ नहीं गंवायेंगे, वह हर सेकण्ड सफल करते हैं। ऐसा सुन्दर समय मनुष्य को पूरे जीवन चक्र में नहीं मिलता।

संगमयुग का महत्व

संगमयुग केवल कुछ वर्षों का समय नहीं है, बल्कि यह आत्मा की भाग्य रेखा बदलने का स्वर्णिम अवसर है। यहाँ आत्मा का परमात्मा से सीधा सम्पर्क स्थापित कर सकती है। यह वह दुर्लभ समय है जब शिवबाबा ज्ञान का प्रकाश फैलाकर अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाते हैं। साथ ही संगमयुग वह सीढ़ी है जो हमें दुःख और अंधकार से सुख और प्रकाश की ओर ले जाती है।

आत्मा की सफाई और शक्ति सम्पन्न बनने का अवसर

कलियुग के प्रभाव से आत्मा पर अनेक विकारों की धूल जम चुकी है। ऐसे में आत्मा को बोझ मुक्त होना और अपने को शक्तियों से सम्पन्न करने का समय है। संगमयुग पर राजयोग और परमात्म स्मृति द्वारा आत्मा स्वयं को स्वच्छ और पवित्र बना सकती है। यह समय आत्मा के लिए शक्ति सम्पन्न बनने और विकारों से मुक्ति पाने का विशेष अवसर है।

भविष्य के भाग्य की नींव रखने का समय

संगम के समय में आत्मा सतयुग और त्रेतायुग के दिव्य जीवन की कमाई करती है। जैसे किसान बुवाई के समय परिश्रम करता है और फसल का आनन्द पाता है, वैसे ही यह युग आत्मा के लिए बुवाई का समय है। यहाँ किए गए श्रेष्ठ कर्म और सेवा भविष्य सुख सम्पन्न जीवन का आधार बनते हैं।

संगमयुग का समय केवल अनमोल ही नहीं बल्कि आत्मा को पवित्र और शक्तिशाली बनाने का व विश्व के भविष्य को नया स्वरूप देने का भी है। तो इस समय को उत्तम बनाने में लगाएं। योग, ज्ञान, पवित्रता और सेवा से आत्मा का भविष्य हीरा बन जाता है। यही संगमयुग का सच्चा महत्व और इसे सार्थक बनाने का मार्ग है।

संगमयुग को उत्तम बनाने की विधि

परमपिता परमात्मा ने मनुष्य की चलती जीवन को बदलने का बीड़ा उठाया है। हम सुबह से शाम तक जो भी कर रहे हैं उसमें बदलाव कर दिव्यता की ओर ले जाते हैं। इसलिए परमात्मा ने दिनचर्या को बहुत ही सिस्टमैटिक बनाया है जहाँ मनुष्य के न सिर्फ कर्मकर्ता बल्कि कर्म को दिव्य कर्म बनाने का उपाय बताया है-

नियमित अमृतवेला योग- दिन की शुरुआत बाबा के मिलन से हो। यही शक्ति का मुख्य स्रोत है।

सुनना श्रवण और मनन चिन्तन- बाबा का ज्ञान आत्मा की दिशा तय करता है। इसे सुनना और जीवन में लागू करना सबसे आवश्यक है।

पवित्रता और मर्यादाएं- संगमयुग में पवित्रता आत्मा का सबसे बड़ा आभूषण है। मर्यादाओं का पालन जीवन को अनुशासन और शक्ति देता है।

सेवा और दान- इस समय केवल अपने लिए नहीं, बल्कि विश्व कल्याण की भावना से सेवा करनी चाहिए। सेवा आत्मा को दोगुनी शक्ति देती है। तत्काल में खुशी का भी अनुभव करते हैं। देने के संस्कार उनमें पल्लवित होते हैं। जिससे वे देवतुल्य बनते हैं।

सकारात्मक संकल्प और स्वमान- 'मैं आत्मा हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ'- ऐसे स्वमान आत्मा को निरन्तर ऊंचा अनुभव कराते हैं।

नोयडा-सेक्टर 50(उ.प्र.)। रक्षाबंधन के अवसर पर माननीय लोकसभा स्पीकर ओम् बिरला को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. यशोदा,सेक्टर 75, ब्र.कु. रचु तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई-बहनें।

मोतिहारी-बिहार। पूर्व केन्द्रीय मंत्री राधामोहन सिंह के 77वें जन्मदिवस पर महात्मा गांधी प्रेक्षागृह में आयोजित सम्मान समारोह में आध्यात्मिक सेवा द्वारा मूल्यों को पुनर्स्थापित करने की सेवा के लिए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीना को सम्मानित करते हुए चंपारण सांस्कृतिक महोत्सव के सहायक सचिव एवं भाजपा नेता अनिल कुमार वर्मा। साथ हैं अन्य।

रेवाड़ी-हरियाणा। राज्यसभा सांसद राम चंद्र जांगड़ा को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. रामसिंह। साथ हैं भाजपा जिलाध्यक्ष वंदना पोपली जी, ज्ञानचंद जी तथा अन्य।

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और वास्तुकारों (एसईए) प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, एसईए प्रभाग अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी,माउंट आबू, एसईए प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी,भिलाई, एसईए प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण,पानीपत, एसईए के ज़ोनल समन्वयक ब्र.कु. पीयूष,नई दिल्ली, दुर्गापुर स्टील प्लांट एचआर कार्यकारी निदेशक श्रीमती सुस्मिता रॉय, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के सीएमडी राजीव कुमार विश्नोई, श्रीनगर,उत्तराखंड, त्रिभुवन विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग संस्थान के प्रोफेसर डॉ. हरि प्रसाद पंडित,नेपाल, वीएनआईटी निदेशक प्रो. पीएल पटेल,नागपुर, इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड एचआरआरएल,पचपदरा के मुख्य जीएम सिसिर कुमार मिश्रा तथा अन्य।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के विश्व शान्ति धाम सेवाकेन्द्र पर आयोजित जन्माष्टमी तथा स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में उपस्थित राजयोगिनी ब्र.कु. सरोज दीदी व अन्य ब्रह्माकुमारी बहन।

कोरापुट-नारायण पटना(ओडिशा)। विधायक पवित्र साउता को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमार भाई। साथ हैं ब्र.कु. रमा व ब्र.कु. हरिप्रिया।

जोधपुर-राज.। जेल अधीक्षक प्रदीप लखावत को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मीनू। साथ हैं ब्र.कु. जयलक्ष्मी।

दिल्ली-गाज़ीपुर। राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय के प्रधानाचार्य से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा बहन। साथ हैं ब्र.कु. नीलम तथा अन्य।

पटियाला-पंजाब। डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर प्रीति यादव को परमात्म संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राखी तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहन।

ज्यूरी-हि.प्र.। झाकरी में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. डोलमा बहन, ब्र.कु. रीना, ब्र.कु. सावित्री, एसजेवीएनएल हाइड्रो प्रोजेक्ट के एचओडी मनीष शर्मा तथा अन्य स्टाफ।

सूचना

आप सभी पाठकों से मिलकर, बात करके बहुत अच्छा लगता है अपने लेखों के माध्यम से, अपनी पत्रिका के माध्यम से। लेकिन समय प्रति समय बदलाव ज़रूरी है और उस बदलाव को स्वीकार करना भी ज़रूरी है। तो एक छोटा-सा बदलाव हम पाठकों के सामने लेकर आ रहे हैं। जो हमारी, आपकी अपनी पत्रिका ओमशान्ति मीडिया का जो पाक्षिक आगमन होता था आप सबके पास, अब उसको मासिक किया जा रहा है। कई सारे पाठकों का ये मत था कि महीने में दो बार थोड़ा ज़्यादा हो जाता है। तो उसको एक में समेटकर मासिक करने का निर्णय लिया गया। और इसमें वो सारी चीज़ें उपलब्ध हैं जो पहले भी थीं। और कुछ उसमें अनुभव, कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें और कुछ नये आयाम जीवन के जोड़कर इस पत्रिका को और अच्छा बनाया गया है।

तो आप सभी से हमें आपके अपने कमेंट तो चाहिए साथ ही इसमें और-और क्या हम नया परिवर्तन करें जो सभी को अच्छा लगे, वो सुझाव भी चाहिए। लेकिन आप सबका प्यार, आप सबकी इसके प्रति इतनी भावना देखकर आज भी हमको इसको बनाने का मन करता है। तो इस नये बदलाव सोलह पेज के साथ इस नयी पत्रिका को आप सभी स्वीकार करें। अब से अगस्त मास से ये पत्रिका मासिक होने जा रही है। इन्हीं सारी बातों के साथ, इन्हीं सारी शुभकामनाओं के साथ इस नये बदलाव का स्वागत करें।